International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

उच्च माध्यमिक विद्यालयों में मूल्य शिक्षा: जिम्मेदार भविष्य के नागरिकों का निर्माण

डॉ. सचिन शर्मा
प्रिंसिपल, जवाहरलाल नेहरू स्कूल, गोहाना सोनीपत

सारांश
वर्तमान वैश्विक और राष्ट्रीय परिदृश्य में जब समाज विविध सामाजिक, नैतिक और पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब उच्च माध्यमिक विद्यालयों में मूल्य शिक्षा का स्थान और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। यह वह उम्र होती है जब छात्र किशोरावस्था से वयस्कता की ओर अग्रसर होते हैं और उनका व्यक्तित्व तेजी से आकार लेता है। यदि इस चरण में उन्हें उचित नैतिक मार्गदर्शन, सहानुभूति, सामाजिक उत्तरदायित्व, अनुशासन और सहिष्णुता जैसे जीवन मूल्यों से परिचित कराया जाए, तो वे न केवल बेहतर विद्यार्थी बनते हैं, बल्कि भविष्य में जिम्मेदार नागरिक के रूप में समाज की सेवा के लिए तत्पर होते हैं। उच्च माध्यमिक स्तर पर मूल्य शिक्षा छात्रों में विवेकशीलता, आलोचनात्मक सोच, आत्म–अनुशासन, और निर्णय लेने की नैतिक क्षमता का विकास करती है। पाठ्यक्रम में नागरिक शास्त्र, नैतिक शिक्षा, पर्यावरणीय शिक्षा, और मानवाधिकार जैसे विषयों का समावेश, सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों जैसे सामाजिक सेवा, स्वच्छता अभियान, बाल संसद, सांस्कृतिक आयोजन, और समूह चर्चाओं के माध्यम से मूल्यों को व्यवहार में लाया जा सकता है। साथ ही, शिक्षकों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो अपने आचरण और संवाद शैली से छात्रों में मानवीय मूल्यों की स्थापना करते हैं।

मुख्य भाब्दः मार्गदर्शन, सहानुभूति, सामाजिक उत्तरदायित्व, अनुशासन और सहिष्णुता।

इस स्तर पर दी गई मूल्य शिक्षा छात्रों को यह समझने में मदद करती है कि उनका व्यक्तिगत आचरण, सामाजिक व्यवहार और नागरिक उत्तरदायित्व लोकतंत्र, सामाजिक समरसता और टिकाऊ विकास के लिए कितना महत्वपूर्ण है। ऐसे छात्र भविष्य में जब नेतृत्व, प्रशासन, व्यवसाय या विज्ञान के क्षेत्र में कदम रखते हैं, तो वे केवल विशेषज्ञ नहीं, बल्कि नैतिक रूप से सक्षम और समाज के प्रति संवेदनशील व्यक्ति बनते हैं। इस प्रकार, उच्च माध्यमिक विद्यालयों में मूल्य शिक्षा को समुचित स्थान देना, देश के नैतिक पूंजी का निर्माण है। यह शिक्षा व्यवस्था का वह आधार है जो केवल अकादमिक सफलता नहीं, बल्कि चरित्र, चेतना और उत्तरदायित्व से युक्त नागरिकों की पीढ़ी तैयार करने की दिशा में एक निर्णायक पहल है।

मूल्य शिक्षा का महत्व – उच्च माध्यमिक विद्यालयों के संदर्भ में:

मूल्य शिक्षा के महत्व को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम उच्च माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों की मानसिक, सामाजिक और भावनात्मक स्थिति को गहराई से समझें। यह वह अवस्था होती है जब छात्र न केवल शैक्षणिक दबावों से जूझते हैं, बल्कि जीवन की दिशा,

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

पहचान, उद्देश्य और समाज में अपनी भूमिका को लेकर भी प्रश्नों का सामना करते हैं। वे अपने अस्तित्व, संबंधों, भविष्य और नैतिक दायित्वों को लेकर मानसिक द्वंद्व की स्थिति में होते हैं। ऐसे समय में मूल्य शिक्षा उन्हें नैतिक स्पष्टता, आत्मबोध और आत्म–संयम प्रदान करने का कार्य करती है।

मूल्य शिक्षा इस स्तर पर छात्रों को सही और गलत के बीच विवेकपूर्ण निर्णय लेने, दूसरों की भावनाओं को समझने और उनके प्रति सहानुभूति एवं करुणा विकसित करने, अपने चरित्र को मजबूती देने, और सामाजिक, भावनात्मक रूप से लचीला बनने में सहायता करती है। यह शिक्षा उन्हें आत्म–केन्द्रित सोच से बाहर निकालकर एक सामूहिक और उत्तरदायी दृ ष्टिकोण की ओर प्रेरित करती है, जहाँ वे समाज, राष्ट्र और पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझते हैं।

इसके माध्यम से छात्र यह समझ पाते हैं कि शिक्षा केवल परीक्षा में अंक प्राप्त करने का साधन नहीं है, बल्कि यह एक जीवन दृष्टि है, जो उन्हें सहिष्णुता, समरसता, ईमानदारी और सहयोग जैसे गुणों से समृद्ध बनाती है। जब मूल्य शिक्षा विद्यालय जीवन में सशक्त रूप से समाहित होती है, तब वह एक ऐसा नैतिक आधार देती है जिस पर छात्र अपने संपूर्ण जीवन की नींव रख सकते हैं। इस प्रकार, मूल्य शिक्षा उच्च माध्यमिक स्तर पर केवल एक विषय नहीं, बल्कि एक जीवन निर्माण प्रक्रिया है, जो एक नैतिक, जिम्मेदार और संवेदनशील नागरिक के रूप में छात्रों का मार्गदर्शन करती है।

इस लेख में मूल्य शिक्षा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए एक समग्र और व्यापक रणनीति का विवेचन किया गया है, जो उच्च माध्यमिक विद्यालयों में छात्रों के नैतिक विकास, सामाजिक चेतना और जिम्मेदार नागरिकता के निर्माण हेतु आवश्यक मानी गई है। सर्वप्रथम, पाठ्यक्रम एकीकरण की रणनीति के अंतर्गत यह प्रस्तावित किया गया है कि मूल्य शिक्षा को विद्यालय के प्रत्येक विषय और शिक्षण प्रक्रिया में स्वाभाविक रूप से समाहित किया जाए। चाहे वह साहित्य हो, सामाजिक विज्ञान, पर्यावरण अध्ययन या विज्ञान – प्रत्येक विषय में मानवीय और नैतिक मूल्यों को संदर्भ और दृष्टिकोण के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए, जिससे विद्यार्थी इन मूल्यों को न केवल जानें बल्कि अपने दैनिक जीवन में आत्मसात करें।

दूसरी प्रमुख रणनीति अनुभवात्मक शिक्षा और सामुदायिक भागीदारी है, जिसके माध्यम से छात्रों को समाज की वास्तविक चुनौतियों से जोड़कर, सेवा–कार्य, सामाजिक परियोजनाओं, जनहित गतिविधियों और संवादमूलक शिक्षण से जीवन मूल्यों को व्यवहार में लाने का अवसर दिया जाता है। उदाहरणस्वरूप, जब छात्र वृद्धाश्रम में सेवा करते हैं, गाँवों में जागरूकता फैलाते हैं, या पर्यावरणीय अभियानों में भाग लेते हैं, तो वे करुणा, सहानुभूति, नेतृत्व और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों का अनुभव करते हैं, जो केवल पुस्तकीय ज्ञान से संभव नहीं होता।

तीसरी रणनीति के रूप में शिक्षकों की भूमिका मॉडलिंग पर बल दिया गया है। शिक्षक केवल विषय विशेषज्ञ नहीं, बल्कि मूल्यों के जीवंत प्रतिनिधि होते हैं। उनका व्यवहार, भाषा, निर्णय

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

और छात्रों से संबंध विद्यार्थियों के लिए एक अनकहा पाठ होता है। जब शिक्षक ईमानदारी, अनुशासन, समानता, और सम्मान जैसे गुणों को अपने आचरण में प्रदर्शित करते हैं, तो विद्यार्थी स्वाभाविक रूप से उन्हें अपनाने के लिए प्रेरित होते हैं। इसलिए, शिक्षकों का सतत प्रशिक्षण और नैतिक रूप से सजग होना, मूल्य शिक्षा की सफलता की कुंजी है।

चौथी रणनीति सकारात्मक स्कूल संस्कृति के निर्माण की है। ऐसा विद्यालय वातावरण जो सहिष्णुता, सहयोग, न्याय, संवाद और विविधता के सम्मान को बढ़ावा देता हो, वह मूल्य शिक्षा के लिए एक उपजाऊ भूमि का कार्य करता है। विद्यालय में यदि प्रत्येक छात्र को समान अवसर, सम्मान, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और गलती से सीखने का अवसर मिलता है, तो वे आत्मविश्वासी और संवेदनशील नागरिक के रूप में विकसित होते हैं। प्रार्थना सभा, बाल संसद, नैतिक कथाएँ, प्रेरक पोस्टर, और सह–पाठ्यक्रम गतिविधियाँ विद्यालय को एक जीवंत नैतिक वातावरण में बदल सकती हैं।

अंतिम लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण रणनीति है अभिभावकीय भागीदारी। मूल्य केवल विद्यालय तक सीमित नहीं होतेय उनका स्थायित्व तभी संभव है जब परिवार और विद्यालय के बीच एक सक्रिय, संवादात्मक और सहयोगपूर्ण संबंध हो। अभिभावकों को भी नैतिक शिक्षण की प्रक्रिया में सहभागी बनाया जाना चाहिए कृ अभिभावक बैठकें, कार्यशालाएँ, और पारिवारिक परियोजनाओं के माध्यम से। जब घर और विद्यालय दोनों स्थानों पर एक जैसे नैतिक संकेत और व्यवहार मिलते हैं, तो बच्चों में मूल्यों की स्थायी समझ और अभ्यास विकसित होता है। इस प्रकार, लेख में प्रस्तुत यह पाँच स्तरीय रणनीति दृ पाठ्यक्रम एकीकरण, अनुभवात्मक शिक्षा, शिक्षक मॉडलिंग, स्कूल संस्कृति और अभिभावकीय सहभागिता दृ मूल्य शिक्षा को शिक्षा प्रणाली में केवल एक विषय नहीं, बल्कि एक जीवनदृष्टि के रूप में स्थापित करने की ठोस योजना है। यह रणनीति न केवल छात्रों को नैतिक रूप से जागरूक बनाएगी, बल्कि उन्हें एक विवेकशील, जिम्मेदार और सामाजिक रूप से उत्तरदायी नागरिक के रूप में भी तैयार करेगी, जो भविष्य में समाज के समुचित विकास में सार्थक योगदान दे सकें।

निष्कर्ष

यह लेख उच्च माध्यमिक विद्यालयों में मूल्य शिक्षा की महत्ता पर केंद्रित है और इसे पारंपरिक शिक्षण के साथ एक अभिन्न एवं अनिवार्य घटक के रूप में देखने की आवश्यकता को रेखांकित करता है। आज जब शिक्षा प्रणाली तेजी से अकादमिक प्रतिस्पर्धा और तकनीकी दक्षता की ओर झुकी हुई है, तब यह और भी अधिक आवश्यक हो गया है कि विद्यार्थियों को केवल सूचनात्मक ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन के लिए आवश्यक नैतिक दिशा–निर्देश, आचार संहिता और मानवीय दृष्टिकोण भी प्रदान किए जाएं। उच्च माध्यमिक स्तर, जो कि किशोरावस्था और युवावस्था के बीच का संक्रमण काल है, विद्यार्थियों के नैतिक बोध, चरित्र निर्माण, और समाज के प्रति संवेदनशीलता के विकास हेतु सबसे उपयुक्त समय माना जाता है।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

लेख में यह विचार प्रमुखता से रखा गया है कि इस अवस्था में दी गई मूल्य शिक्षा छात्रों में केवल सद्गुणों का बीजारोपण नहीं करती, बल्कि उनके भीतर सुनिश्चित आचरण, लोकतांत्रिक भावना, संवैधानिक मूल्यों की समझ, और सहिष्णुता आधारित दृष्टिकोण को भी विकसित करती है। पाठ्यक्रम, सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों, अनुभवात्मक शिक्षण और शिक्षक–छात्र के संवाद में मूल्यों को समाहित करके शिक्षा को एक समग्र रूप देने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। इसके अतिरिक्त, यह भी स्पष्ट किया गया है कि शिक्षकों की भूमिका केवल विषय पढ़ाने तक सीमित नहीं है, बल्कि वे स्वयं मूल्यों के व्यवहारिक प्रतिनिधि बनकर छात्रों के चरित्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। लेख यह भी दर्शाता है कि यदि विद्यालयों में मूल्य शिक्षा को सही ढंग से लागू किया जाए, तो यह छात्रों को आजीवन नैतिक दिशा प्रदान कर सकती है और उन्हें समाज के प्रति जागरूक, उत्तरदायी एवं संवेदनशील नागरिक के रूप में विकसित कर सकती है। ऐसे छात्र जब भविष्य में विभिन्न क्षेत्रों – प्रशासन, शिक्षा, विज्ञान, सेवा या राजनीति – में प्रवेश करेंगे, तो वे अपने कार्यों से केवल व्यक्तिगत सफलता ही नहीं, बल्कि सामाजिक समरसता, न्याय और सहयोग की भावना को भी पुष्ट करेंगे।

अतः यह लेख इस बात की वकालत करता है कि मूल्य शिक्षा को केवल एक वैकल्पिक विषय न मानकर, उसे शिक्षा का केंद्रीय उद्देश्य बनाया जाए, जिससे हम एक ऐसे समाज की आधारशिला रख सकें जो न केवल ज्ञानवान, बल्कि नैतिक दृष्टि से सशक्त, संवेदनशील और जिम्मेदार नागरिकों से युक्त हो।

संदर्भ सूची

1. शिक्षा मंत्रालय. नई शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार, 2020.
2. एनसीईआरटी. विद्यालयों में मूल्यों की शिक्षा रू एक रूपरेखा. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, 2012.
3. कुमार, कृष्ण. व्हाट इज वर्थ टीचिंग? तृतीय संस्करण, ओरिएंट ब्लैक्स्वान, 2004.
4. नॉडिंग्स, नेल. एजुकेटिंग फॉर इंटेलिजेंट बिलीफ ऑर अनबिलीफ. टीचर्स कॉलेज प्रेस, 1993.
5. यूनेस्को. लर्निंगः द ट्रेजर विदइन. जैक्स डेलॉर की अध्यक्षता में इक्कीसवीं सदी के लिए शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय आयोग की रिपोर्ट, 1996.
6. शर्मा, आर. ए. शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधार. आर. लाल बुक डिपो, 2010.
7. अग्रवाल, जे. सी. शिक्षा का सिद्धांत और तत्व. विकास पब्लिशिंग हाउस, 2011.
8. पाठक, अविजीत. आधुनिक भारत में शिक्षा और समाज. रावत पब्लिकेशन्स, 2013.
9. चटर्जी, एस. के. मूल्य शिक्षा, पर्यावरण और मानवाधिकार. शिप्रा पब्लिकेशन्स, 2008.
10. सिंह, वाई. के. वैल्यू एजुकेशन. एपीएच पब्लिशिंग, 2009.
11. गिल, प्रीत. "विद्यालयों में नैतिक मूल्यों के एकीकरण की आवश्यकता." इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, खंड 5, अंक 2, 2020, पृष्ठ 98–105.

12. बेहरा, बी. के. "भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और मूल्य शिक्षा." इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च एंड रिव्यू, खंड 8, अंक 1, 2021, पृष्ठ 214–221.
13. घोष, सुरेश चंद्र. आधुनिक भारत में शिक्षा का इतिहासरू 1757–2012. ओरिएंट ब्लैक्स्वान, 2013.
14. श्रीवास्तव, आर. एन. शांति शिक्षा और मूल्य शिक्षा. रिगल पब्लिकेशन्स, 2010.
15. राय, ए. के. "भारत में मूल्य आधारित शिक्षा हेतु शिक्षण पद्धतियाँ."जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, एनसीईआरटी, खंड 44, अंक 3, 2019, पृष्ठ 14–25.